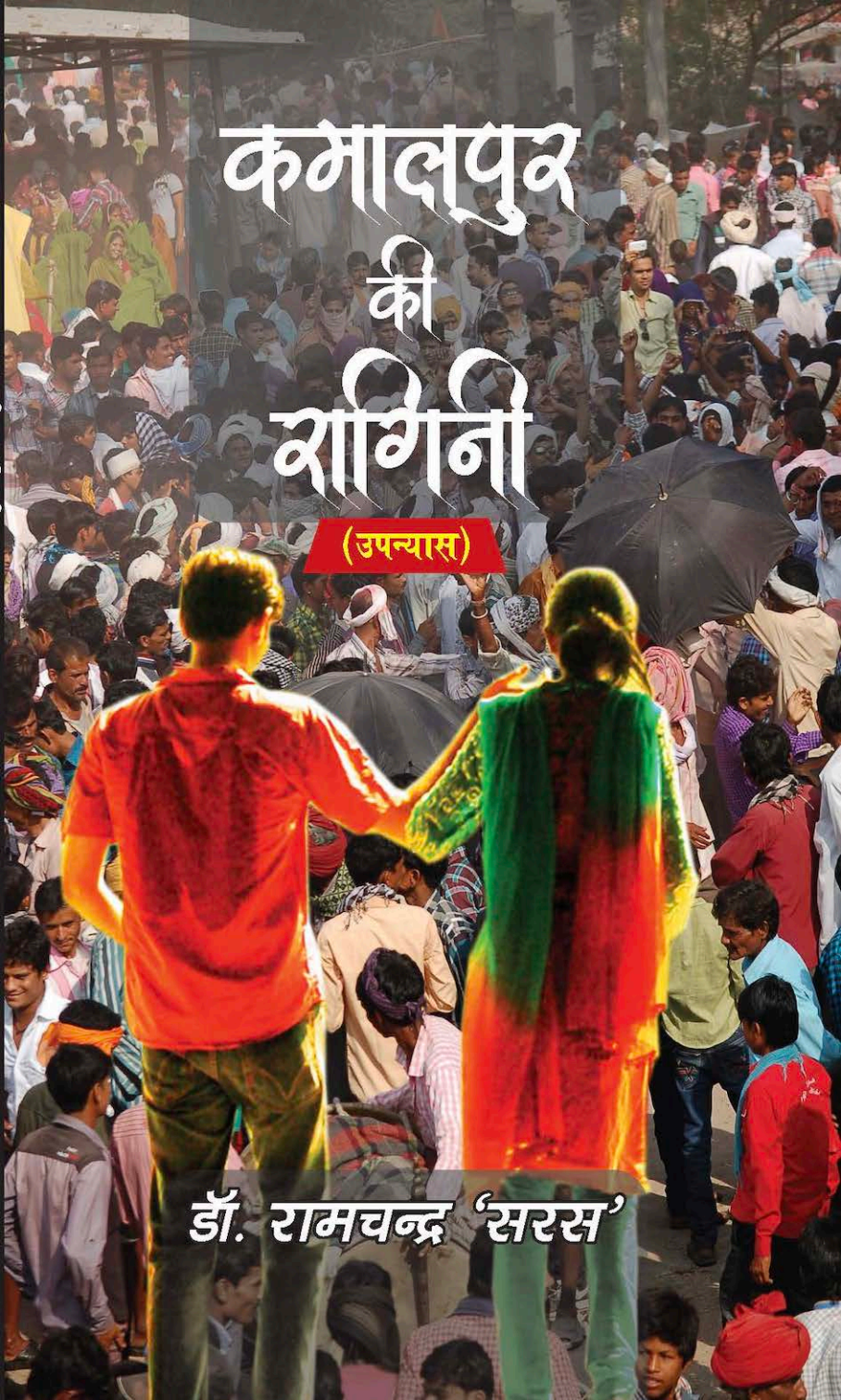

# कमालपुर की रागिनी

(उपन्यास)

डॉ. रामचन्द्र 'सरस'

## डॉ. रामचन्द्र 'सरस'

**पिता** : स्व. जगमोहन सिंह यादव

**माता** : स्व. शिव सखी

**जन्म स्थान** : ग्रा.–जाखी, पो.–साडा साढ़ी, जि.–बांदा (उ.प्र.)

**जन्म तिथि** : 12 सितंबर, 1957

**पत्नी** : श्रीमती चंद्रावती

**दायित्व :**

1. सदस्य, राष्ट्रीय परिषद सीपीआई
2. सदस्य, कार्यकारिणी प्रगतिशील लेखक संघ, उ.प्र.
3. अध्यक्ष, भूमि विकास बैंक बबेरू, बांदा
4. प्रभारी, चित्रकूट मंडल सीपीआई

**रचनात्मक उपलब्धियाँ :**

**कविता संग्रह**– 'किसान कथा,' 'जनरल बोगी,' 'चित्रकूट के राम', 'आईना', 'खटकते सवाल', 'आदमी की भूख'।

**उपन्यास**– 'आहुति','चिंगारी','कमालपुर की रागिनी','काकोरी के बाद कमासिन','जलन'।

**कहानी संग्रह**– 'हिंदू की मौत'।

**सम्पर्क** : राजापुर रोड, कमासिन, बांदा (उ.प्र.) 210125

**मो.** : 94510–93745, 91255–01293

₹ 180.00

ISBN 978-81-948560-5-4

लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस

नई दिल्ली

फोन : 99682-88050, 82879-88726

# कमालपुर की रागिनी

# कमालपुर की रागिनी

डॉ. रामचन्द्र 'सरस'

*लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस*

*लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस*

I.S.B.N # 978-81-948560-5-4

4637/20, शॉप नं.–एफ–5, प्रथम तल, हरि सदन,

अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली–110002

मो.: 9968288050, 8287988726

ई–मेलः littlebirdinfo21@gmail.com

प्रथम संस्करण : 2021

© रामचन्द्र 'सरस'

मूल्य : ₹ 180/–

आवरण चित्र : बंशीलाल परमार

लेज़र कम्पोजिंग : लिटिल बर्ड, नई दिल्ली

मुद्रक : क्लासिक प्रिंटर्स, दिल्ली

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

## समर्पण

पाला पोसा बड़े जतन से,
दुःख सह के सुख दीन्हा।
अर्पित श्रद्धा सुमन उन्हें यह,
जिनसे मानवता को चीन्हा ॥

सहनशीलता की नदिया, साहस का दरिया, परम पूजनीया माता स्व.श्रीमती शिवसखी देवी (जिन्होंने मेरे फुर्तीले, हल्के बदन के कारण मुझे दुलार से गिल्ली नाम दिया था) जिन्होंने मुझे, आम आदमी की मजबूरियों एवं पीड़ा को गहराई से समझाया, उनसे लड़ने की हिम्मत दी, उन्हीं के श्रीचरणों में यह लघु पुष्प समर्पित।

# व्यवस्था की टीस व आमजन की कराहों का दस्तावेज 'कमालपुर की रागिनी'

कमालपुर की रागिनी स्वातंत्र्योत्तर भारत में स्थापित व्यवस्था में जन्मी, विद्रूपताओं को उजागर करता दस्तावेज और आज का यथार्थ है।

हमने सुना है 'नाग यज्ञ' जिसके प्रतिशोध में नागों ने रचा 'आम यज्ञ' जिसकी आहुति है, आमजन यज्ञ कुण्ड की व्यवस्था। इस प्रकार, सामंतवादियों, पूँजीपतियों, धर्माचार्यों, तंत्रवादियों, राजनीतिज्ञों व नौकरशाहों द्वारा आहूति इस व्यवस्था रूपी यज्ञ कुण्ड में, आम आदमी का किरका-किरका किस तरह से समा रहा है और अन्त में टूटकर, दे देते हैं खुद की आहुति, मिटा देते हैं अपना अस्तित्व। इन्हीं रहस्यों को खोलता है उपन्यास 'कमालपुर की रागिनी'।

तो क्या इस यज्ञ में हम इसी तरह समाते जाएँगे, या कभी बन्द होंगी ये आहुतियाँ। यह उपन्यास बुद्धजीवियों को और पाठकों के सामने एक अनुत्तरित पुश्न लेकर आया है।

डॉ. साहब, मेरे सदैव प्रेरणास्रोत रहे हैं। उनकी इस अमूल्य कृति को देख मुझे अपार हर्ष हुआ। इसे पढ़ते हुए व्यवस्था से निकलती टीस और आम आदमी की कराहों के बीच मैं खुद के आँसू रोकने में असमर्थ रहा। अन्त में उन्हें एक महान रचना हेतु कोटिशः धन्यवाद !

**प्रमन कुमार पाण्डेय**
सदस्य
प्रगतिशील लेखक संघ
इकाई बबेरू–बाँदा, उ. प्र.

# नम्र निवेदन

सम्मानित पाठक साथियो!

'कमालपुर की रागिनी' उपन्यास आपके हाथों में समर्पित करते हुए अपार हर्ष हो रहा है। यह मेरा प्रथम प्रयास कैसा होगा, इसका निर्णय तो आप ही कर सकते हैं। किन्तु इसके पहले मुझे यह बताने में कतई हिचक नहीं है कि मैं हिन्दी जगत से अनभिज्ञ हूँ...।

इण्टरमीडिएट तक विज्ञान का छात्र होने के नाते हिन्दी पढ़ने का तो कोई सवाल ही नहीं उठता। उसके बाद आयुर्वेदाचार्य (बी.ए.एम.एस.) की भी शिक्षा में हिन्दी का दूर-दराज तक कोई रिश्ता नहीं था।

वर्ष 1980 में आयुर्वेद छात्र आन्दोलन के दौरान करीब ग्यारह माह की अवधि तक कई जेलों में रहने का मौका मिला। जहाँ पर समय बिताने की नियति से जेलों में उपलब्ध हिन्दी साहित्य पढ़ने को मिला, वहीं से हिन्दी की ओर रुचि बढ़ने लगी, कई उपन्यासकारों की कृतियाँ पढ़ने को मिलीं, जेल में ही वामपंथी आंदोलनकारियों के सान्निध्य ने आम आदमी की पीड़ा एवं उसके सृजन की ओर आकर्षित किया, सूर्य नारायण श्रीवास्तव के उपन्यास 'आग, धुआँ और इंसान' ने तो मुझे इतना आहत किया कि मैं मौजूदा व्यवस्था में आम आदमी की दारुण गाथा पर कलम उठाने को विवश हो गया। महान प्रगतिवादी रचनाकार बाबू केदारनाथ अग्रवाल की सीख, प्रगतिशील लेखक संघ, बबेरू की गोष्ठियाँ एवं उनके संचालक महाकाव्यकार श्री रमाशंकर मिश्र व श्री लक्ष्मी प्रसाद गुप्त के मार्गदर्शन, कहानीकार श्री शिशुपाल जी की कहानियों के मर्मान्तक बाणों ने मुझे कुरेदा, मेरी माँ स्व. श्रीमती शिवसखी देवी की वेदना-भरी करुण जिन्दगी, मुसीबतों से लड़ने के अदम्य साहस ने उद्वेलित किया, मेरे साथी आचार्य उमाशंकर सिंह की कृतियों ने झकझोरा। इन सबके परिणाम में 'कमालपुर की रागिनी' आप के हाथों में है।

यह उपन्यास किसी कहानी का हिस्सा नहीं है। यह आजादी की साठ वर्ष की प्रगति है। आजादी के तीन दशक पूर्व से आज तक की यात्रा का घोषित परिणाम है। व्यवस्था के मानवीय जिम्मेदार, जनता द्वारा चयनित नुमाइंदों की सोच आपके सम्मुख प्रस्तुत है।

उपन्यास के सभी नाम, स्थान, पात्र काल्पनिक हैं। यदि कोई नाम व स्थान किसी से मेल खाता हो तो उसे अपने साथ जोड़ने का कष्ट न करें।

मुझे आशा है कि आम आदमी की जिन्दगी की मुसीबतें, बढ़ते हुए बारूदी हथियारों की धूम, श्रमिकों के हिस्से को लूटकर गहरी जड़ें जमाता हुआ पूँजीवाद, बेरोजगारी फैलाकर लोगों को मजबूर करने जैसे कार्यों, गरीबी एवं रूढ़िवादिता के प्रति यदि आपका मन आहत हुआ तो मैं अपना प्रयास सफल समझूँगा। इसी आशा के साथ !

आपका सादर !

**डॉ. रामचन्द्र 'सरस'**

# अपना भी लहू सुर्खिए शामो सहर में है

लेखक के किसी भी प्रलेख की अर्थवत्ता उसके सफल सम्प्रेषण से निर्धारित होती है। कविता की रचनाधर्मिता सरल है क्योंकि उसकी अंतर्वस्तु भावभूमि पर आधारित है। अस्तु छंदों के मायाजाल से लेकर तुकान्त किसी भी रूप में रची जा सकती है।

कवि असफल सम्प्रेषण व उचित रसवत्ता के लिए छन्दों को लेकर कोई भी बहाना कर सकता है, अपने अपकर्षी दोषों से बचाव कर सकता है। परन्तु गद्य में यह बात नहीं है। यहाँ लेखक के पास बहानेबाजी को कोई अवकाश नहीं है। लेखक स्वतंत्र है, कुछ भी लिख सकता है, किसी भी प्रकार से लिख सकता है। अतः असफलता के लिए बहाना नहीं कर सकता। इसी कारण गद्य का लेखन कविता से दुष्कर है। इस तथ्य को देखते हुए संस्कृत साहित्य में ये उक्ति प्रसिद्ध है—'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति'।

गद्य में भी निबन्ध, कहानी, नाटक इत्यादि लिखना आसान है पर उपन्यास लिखना कठिन है। उपन्यास लेखन में कठिनता अंतर्विषयक होती है। ये दो प्रकार की होती है। पहली समस्या है उपन्यास की वस्तु पर लेखक का स्वत्व हावी हो जाना। कोई भी उपन्यासकार अपने को उपन्यास से अलग नहीं कर सकता। किसी न किसी प्रसंग में उसका आत्म आ जाएगा। इसी वैयक्तिकता को देखते हुए अंग्रेजी उपन्यासकार वाल्टर स्कॉर्ट ने उपन्यास को 'आत्मालोचना का प्रयास' कहा है। यह आत्मालोचना ही उपन्यास का उद्देश्य होता है। यहाँ उसकी मूल थीम होती है।

अतः सफल आत्मालोचक ही सफल उपन्यासकार होता है। जो आत्मालोचक नहीं है वह सफल उपन्यासकार नहीं हो सकता।

दूसरी समस्या का विस्तार फलक है। उपन्यास का कलेवर सामाजिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक जैसे आयामों को स्पर्श करता है। किसी भी कोण में चूक हो सकती है। लेखक इस उत्तरदायित्व का सफलतापूर्वक निर्वहन करते हुए तमाम रचनात्मक विसंगतियों से जूझते हुए कृति की सर्जना करता है। उपन्यासकार का जुझारू और संघर्षप्रिय होना खास गुण है। यही गुण उसे रूढ़ियों को तोड़ने की प्रेरणा प्रदान करता है जिसका फल अन्ततः उपन्यास की सार्थक अभिव्यक्ति होती है।

यह 'कमालपुर की रागिनी' इन दोनों गुणों से युक्त लेखक की कृति है। लेखक शूरवीर है, कायर नहीं। मैं डॉ. सरस को जहाँ तक जानता हूँ, तो ये जानता हूँ कि जितना वह अपने ऊपर निर्दय हैं शायद कोई नहीं हो सकता। अपनी आलोचना करने वाले सफल आत्मालोचक हैं। वे मेरे मित्र हैं। इस मित्रता का कारण उनका आत्मालोचक होना भी है।

इस उपन्यास के नायक से लेखक का व्यक्तित्व मेल खाता है। 'कमालपुर की रागिनी' का परिदृश्य एवं संघर्ष, लेखक का परिदृश्य और संघर्ष प्रतीत होता है। अस्सी के दशक में छात्र डॉक्टरों द्वारा किया गया आन्दोलन और उसमें डॉ. सरस की महत्वपूर्ण भूमिका किसी से छिपी नहीं है। मुझे तो ये संघर्ष ही इस उपन्यास का प्रेरणास्रोत प्रतीत होता है। सरकारी अस्पतालों के भयावह भ्रष्टाचार को उजागर करना इस उपन्यास में एक मूल थीम ही है। ये अस्पताल भी उसी व्यवस्था के अंग हैं जो सर्वहारा के खून पीने को ही अपना धर्म मानते हैं। डॉ. सरस की पैनी नजर ने इस दिशा में काम कर जनता का बड़ा हित किया है।

'कमालपुर की रागिनी' की अंतर्वस्तु घोर सामाजिक विसंगतियों की उपज है। उत्तर आधुनिकता के दौर में सामन्तवादी और महाजनी शोषण का चीखता हुआ उदाहरण है। उपन्यास में बुधिया का लड़का क्या बीमार होता है कि समस्त भ्रष्ट तंत्र गीध की तरह उस पर टूट पड़ते हैं और अपने-अपने साधनों से उसका शोषण करते हैं। पं. जगन्नाथ ओझा, कमला नेहरू अस्पताल के डॉक्टर सब एक जैसे प्रतीत होते हैं। सबकी मानवीय संवदेना मर चुकी है। इनकी जीभ में गरीब का खून लग चुका है जिसके लिए आपस में मिलकर शोषण की नई-नई तकनीक ईजाद करते हैं। मात्र राकेश नामक पात्र से लेखक की संवेदना है हालाँकि वह भी उसी शोषित वर्ग से आया है क्योंकि उसने मजबूरों, मजलूमों का खून नहीं पिया बल्कि खून दिया है। उसकी चेतना में आक्रान्तकारी, भ्रष्ट, पक्षपातपूर्ण, वर्ग-हितैषी व्यवस्था के प्रति निरंतर आक्रोश है, नफरत है। सरकारी तंत्र की मुखालफत का साहस है, अभिजात्यवर्ग के प्रति उसके अन्दर विद्रोह है। सर्वहारा के प्रति चिंतन है। वह संवेदना का पात्र हो सकता है। अतः राकेश के प्रति लेखक को जो संवेदना है वह उचित है।

उपन्यास का शीर्षक क्लासिकल (अभिजात्य) होने का भ्रम उत्पन्न कर सकता है। लेखक ने उसका नाम यज्ञ रखा था। मुझे यज्ञ शब्द में अर्थवत्ता नहीं दिखी जो औपन्यासिक कथ्य के अनुकूल होनी चाहिए।

डॉ. सरस से कहकर मैंने पहले आहुति रखा क्योंकि इसमें व्यवस्था के खिलाफ लड़कर टूट जाने की नहीं, गीधों के रूप में शोषकों के सामने मांस के

लोथड़े के समान बिखर जाने की नहीं (जैसे कि गोदान में है), स्वयं का उत्सर्ग, क्रान्ति का आदर्श प्रस्तुत करने की प्रेरणा है। अतः इस किसानी जीवन के महाकाव्य का नाम आहुति भी रखने पर विचार किया गया। हालाँकि बाद में नाम में फेर-बदल हुए और 'कमालपुर की रागिनी' नाम पड़ा।

उपन्यास का शिल्प पक्ष बढ़िया है। सामान्य पाठक के लिए कौतूहल व रसवत्ता दोनों मौजूद हैं। इसका मुख्य कारण लेखक द्वारा इस उपन्यास में दो प्रकार की शैलियाँ प्रयोग की गई हैं। एक दृश्यात्मक, दूसरी वर्णनात्मक। इन दोनों शैलियों के द्वारा यथार्थ की वीभत्सता व पूँजीवादी शोषण की तीव्रता को दिखाया जाता है। यथार्थवादी साहित्य में शैलियाँ अवश्य मिलेंगी चाहे जिस भाषा का साहित्य हो। रूसी में गोर्की की मदर, टालस्टाय की अन्ना करलीना, फ्रेन्च में विक्टर ह्यूगो के उपन्यास, इंगलिश में स्टाक, बाँगला में बंकिम बाबू का आनन्द मठ, हिन्दी में तमस, गोदान, रागदरबारी, शेखर एक जीवनी, मैला आँचल सब में यथार्थवाद है। लेखक ने इस उपन्यास में इन शैलियों का प्रयोग करके यथार्थवादी साहित्य की रचना की है। इनका सफलतापूर्वक प्रयोग उनकी बुद्धि-परिपक्वता की अभिव्यक्ति करता है।

दृश्यात्मक शैली चित्र दर्शन की तरह होती है जिसमें घटना का चित्र खींचने की कोशिश की जाती है। वर्णनात्मक शैली लेखक की मूल शैली है जिसमें कहानी को किस्सा की तरह पेश किया जाता है। इन दोनों के उदाहरण इस उपन्यास में इस प्रकार हैं–

'पूरी सामग्री अपने पास बुधिया से रखा ली। पहले सात कलश बनाये फिर पत्थर की पटिया रखकर उसमें सफेद कपड़ा बिछाया'।

यह है 'दृश्यात्मक शैली'।

'बाजार हेतु पर्चा लिखे जिसमें सात धोती, सात कुर्ता, सात लोटा, सात नारियल, सात पूड़ा हवन, अगरबत्ती...इत्यादि।'

यह हुई 'वर्णनात्मक शैली'।

विश्व के महान उपन्यासों पर प्रयुक्त यह शैली इस रचना को उसी परम्परा से जोड़ देती है। इन शैलियों का प्रसंगानुसार प्रयोग उपन्यास को महान बना देता है।

डॉ. सरस मेरे परम मित्र हैं और संघर्ष के साथी हैं। उनकी यह नागरी सेवा सर्वदा याद रखी जाएगी। उनका यह कृत्य स्पृहणीय है। उन्होंने सर्वहारा की आवाज को उठाया है। वर्षों से उपेक्षित पड़े लोगों की ओर आकर्षित किया

है। यह उपन्यास भारतीय सर्वहारा के चौतरफा शोषण का दस्तावेज है। धार्मिक पाखण्डों में छिपे पूँजीवादी शोषण का पर्दाफाश है, भूख और गरीबी से मरती हुई जनता की चीख है। शासन और कानून के लम्बरदारों की पूँजीवादी मनोवृत्ति व तानाशाही का उदाहरण है। सफेदपोश बनकर बैठे हुए कथित सभ्य लोगों के लिए आइना है। क्रान्ति के लिए तैयार नेतृत्व विहीन सर्वहारा की यह आवाज है कि 'अपना भी लहू सुर्खिए शामो सहर में है'। दुनिया वालो हमें उपेक्षित न करो, देखकर चलो।

**आचार्य उमाशंकर सिंह**
प्रवक्ता हिन्दी
आदर्श किसान इण्टर कॉलेज, भभुवा
जिला—बाँदा
(उ.प्र.)

# अनुक्रम


- समर्पण *v*
- व्यवस्था की टीस व आम जन की कराहों का दस्तावेज 'कमालपुर की रागिनी' *vi*
- नम्र निवेदन *vii*
- अपना भी लहू सुर्खिए शामो सहर में है *ix*
- एक 15
- दो 25
- तीन 48
- चार 71
- पाँच 81
- छह 94